पर जिस प्रतिदर्श का निर्माण किया जाता है, उसकी
विश्वसनीयता होता है। इसका कारण यह है कि यह प्रति
दर्श अपनी जनसंख्या का सही प्रतिनिधित्व करता
है और इसमें किसी इकाई के छूट जाने की
संभावना नहीं रहती है।
(7) उच्च प्रतिनिधित्वपूर्ण वैधता — स्तरित यादृच्छिक
प्रतिचयन में साधारण या दैविक प्रतिदर्श की
अपेक्षा प्रतिनिधित्वपूर्ण वैधता अधिक पायी जाती है
कारण यह है कि इसमें जनसंख्या की सभी
विशेषताओं के उपस्थित रहने की सम्भावना अधिक
रहती है।
दोष, अभाव या सीमायें —
(1) जनसंख्या की इकाइयों को निर्धारित करने की कठिनाई —
स्तरित प्रतिचयन तथा प्रतिदर्श (Sample) के साथ
एक कठिनाई यह है कि यहाँ स्तरीकरण के लिए
जनसंख्या की सभी इकाइयों को निश्चित तथा निर्धारित
करना होता है। यह एक कठिन कार्य है। यदि
शोधकर्ता को जनसंख्या की इकाइयों की पूरी
जानकारी न हो तो स्तरित प्रतिदर्श का सही निर्माण
संभव नहीं होगा।
(2) स्तरीकरण की कठिनाई — स्तरित प्रतिचयन
अथवा स्तरित प्रतिदर्श के साथ एक कठिनाई
यह भी है कि यहाँ जनसंख्या को भिन्न-भिन्न
मापदण्डों के आधार पर स्तरित करना होता है
लेकिन स्तरीकरण एक जटिल तथा कठिन कार्य
है। जनसंख्या में विभिन्नता या विषमता जितनी
ही अधिक होती है, स्तरीकरण उतना ही अधिक
कठिन होता है। इसमें चूक हो जाने पर स्तरीकरण
ही त्रुटिपूर्ण बन जाता है और वैज्ञानिक प्रतिदर्श का
निर्माण करना संदिग्ध बन जाता है।
(3) जनसंख्या-इकाइयों तथा प्रतिदर्श-इकाइयों में
अनुपात की कठिनाई — इस प्रतिदर्श में प्रत्येक
समूह या स्तर से उसी अनुपात में इकाइयों का
चयन किया जाता है, जिस अनुपात में वे
जनसंख्या में उपलब्ध होती हैं। इस तरह जनसंख्या
के प्रत्येक स्तर तथा प्रतिदर्श के प्रत्येक

K. Nand M.A II Sem 5 (2)

स्तर की इकाईयों को समानुपाती बनाना आवश्यक होता है जो वस्तुतः एक कठिन कार्य है। यदि इकाईयाँ समानुपाती नहीं हो पाती है तो प्रतिदर्श वैज्ञानिक नहीं हो पाता है।

4. धन, श्रम तथा मुद्रा का व्यय — साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन (Sampling) की तुलना में स्तरित या दैव निदर्शन प्रतिदर्श अधिक खर्चीला होता है। इसमें समय अधिक लगता है, श्रम अधिक करना पड़ता है तथा मुद्रा का खर्च अधिक होता है। कारण, यहाँ यादृच्छिकरण के पहले स्तरीकरण करना पड़ता है जो एक जटिल तथा कठिन प्रक्रिया है।

5. जन संख्या का गतिशील स्वरूप — स्तरित प्रतिदर्श (Stratified Sample) के साथ एक कठिनाई यह भी है कि स्तरों (Strata) का स्वरूप स्थाई नहीं होता है। इसलिए जिन सूचनाओं के आधार पर स्तरीकरण किया जाता है उसमें परिवर्तन हो जाता है। फलतः प्रतिदर्श की विश्वसनीयता तथा प्रतिनिधित्वता घट जाती है।

6. व्यक्तिगत पक्षपात के प्रभाव की सम्भावना — स्तरों (Strata) के चयन पर व्यक्तिगत पक्षपातों के प्रभाव की सम्भावना बनी रहती है। सम्भव है कि जनसंख्या या समष्टि का स्तरीकरण करते समय शोधकर्ता अपनी पूर्व धारणा, पूर्व अनुभव, अनुकूलित प्रतिक्रिया आदि व्यक्तिगत पक्षपातों से प्रभावित हो जाये। ऐसी स्थिति में वैज्ञानिक प्रतिदर्श का निर्माण सम्भव नहीं हो सकेगा।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि स्तरित प्रतिचयन या स्तरित या दैव निदर्शन प्रतिदर्श में कई प्रकार की कठिनाइयाँ हैं। परन्तु इसके लाभों पर ध्यान केन्द्रित करने पर स्पष्ट हो जाता है कि स्तरित प्रतिचयन साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन की तुलना में अधिक वैज्ञानिक है।